5 अक्टूबर 2022
मूल्य : 5.00 रुपये

मालवा-निमाड़

जाग्रत मालवा

पंजीयन क्रमांक : MPHIN36496
मासिक जागरण पत्रिका

अयोध्या में भव्य दीपोत्सव

अयोध्या चौदह वर्ष बाद अपने राम के स्वागत में जगमग हो जाती है, अयोध्या दीपोत्सव मनाती है और रामजी सदियों के संघर्ष के बाद भव्य मंदिर मे विराजेंगे.... पढिए जाग्रत मालवा के इस अंक में

Azadi Ka Amrit Mahotsav

SHAKTI
PUMPING LIFE

सूर्य ही नई शक्ति

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम

सौर ऊर्जा का उपयोग एवं अपार फ़ायदों को सभी जानते है, और इसलिये हर जगह एवं हर क्षेत्र में इसका अस्तित्व दिखने लगा है. अब सौर ऊर्जा का उपयोग उद्योगों के साथ साथ घरेलु बिजली के उपयोग में भी होने लगा है.

शक्ति पम्पस् ने शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम को विकसित किया है.

MRP 29500/-

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम

- 150 वॉट का एक सोलर पेनल
- लिथीयम एंड फास्फेट (LFP) बैटरी 60 Ah
- MPPT चार्ज कंट्रोलर 20 A
- डीसी सिलिंग फैन
- 02 व्हाईट एलईडी बल्ब 6 वॉट

विशेषताएं

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम में एक बार का निवेश जो आपको साल–दर–साल फायदा पहुंचाएं.

- बिजली के बिल में कमी
- लम्बे समय तक चले
- भरोसेमंद एवं बाधा रहित परफॉर्मेंस
- रख–रखाव एवं चलाना आसान
- पर्यावरण–अनुकूल
- प्रचुर मात्रा में उपलब्धता
- परंपरागत ऊर्जा के स्रोतों पर निर्भरता से मुक्त
- सरल संचालन
- लिथियम बैटरी की लाईफ अन्य सामान्य बैटरी की तुलना में अधिक है एवं यह बहुत जल्दी चार्ज होती है.

सोलर कंट्रोलर की विशेषताएं

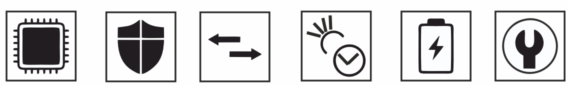

HIGH PERFORMANCE CHIP | MULTIPLE PROTECTION | AUTOMATIC RECOGNITION | LIGHT EFFICIENCY TIME CONTROL | PWN CHARGE | SIMPLE INSTALLATION

कार्यप्रणाली

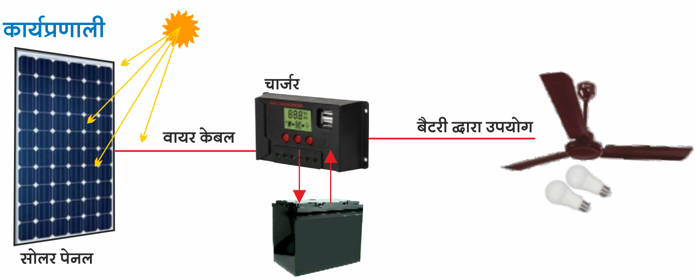

India : Toll Free No. 1800 103 5555

शक्ति पम्पस् (इंडिया) लिमिटेड

सेक्टर – 3, औद्योगिक क्षेत्र, पीथमपुर, जिला–धार (म.प्र.) – इंडिया फोन.: +91-7292-410500
ई–मेल: info@shaktipumps.com, वेब: www.shaktipumps.com. टोल फ्री नं.: **1800 103 5555**

* नियम व शर्ते लागू

जाग्रत मालवा
इन्दौर दिनांक 5 अगस्त 2022 मासिक जागरण पत्रिका

मासिक जागरण पत्रिका
शीर्षक (टाईटल) पंजीयन MPHIN36496
वर्ष : 02 अंक : 03

भाद्रपद/शुक्ल
युगाब्द ५१२४

प्रधान संपादक
देवकृष्ण व्यास
संपादक
अरुण सपकाले
संपादक मंडल
डॉ. सुब्रतो गुहा
डॉ. सोनाली नरगुन्दे
डॉ. रत्नदीप निगम
डॉ. उत्तम मीणा
अशोक वर्मा

मुख्य कार्यालय
जाग्रत मालवा
जी-1, केसरदीप एवेन्यू
72, नारायण बाग, इन्दौर (म.प्र.)
पिन कोड : 452007
फोन : 0731-3551341

Email :
jagratmalwa@gmail.com
jagratmalwa

स्वामी - विश्व संवाद केन्द्र के लिए प्रकाशक और मुद्रक दिनेश गुप्ता द्वारा मुद्रांकण ऑफसेट ए-11/डी पोलोग्राउंड इंदौर म.प्र. से मुद्रित एवं 72, नारायण बाग, जी-1, केसरदीप एवेन्यु इन्दौर म.प्र. से प्रकाशित। संपादक अरुण सपकाले फोन नं. 0731-3551341

अपनी बात

ॐ

भारतीय संस्कृति सदैव अंधकार से प्रकाश की ओर बढ़ने की प्रेरणा देती है। ''तमसो मा ज्योतिर्गमय'' और इसी मंत्र को जीवन में उतारकर हर तीज त्यौहार पर दीप प्रज्वलित कर प्रकाश की उपासना करते हैं। श्रीराम जब लंका पर विजय प्राप्त कर अयोध्यावासियों का आनंद दीपोत्सव द्वारा परमानंद को प्राप्त हुआ वनवासी राम राजा राम हुए और रामराज्य की स्थापना हुई। प्रकाश का पर्व दीपावली प्रतिवर्ष अनेक सांस्कृतिक पर्वों को साथ लेकर आता है। कार्तिक मास की धनतेरस से भैया दूज तक इस पंच दिवसीय त्यौहार से कई प्रसंग जुड़े हैं। आनंदवर्धक पर्वराज दीपावली संपूर्ण सांस्कृतिक विशेषताओं के साथ जनमानस को उत्साह से भर जाता है। राम का अयोध्या लौटने का अर्थ है सत्यमेव जयंते। दीपावली पर लक्ष्मी पूजन इसलिए कि कल्याणकारी लक्ष्मी हमारे घर में रमण करें, हमारे राष्ट्र में रमण करें। लक्ष्मी सौंदर्य और सौभाग्य की देवी भी मानी जाती है, वर्षभर में यह सबसे सुन्दर काल माना जाता है। कार्तिक मास में प्रतिदिन स्नान तथा इस माह का महात्म्य सुनने की परम्परा आज तक विद्यमान है इसी समय अमावस के अंधकार को परास्त करने के लिए नन्हे-नन्हे दीप अपनी एकता की शक्ति प्रमाणित करते हैं। लक्ष्मी पूजन के दूसरे दिन गोवर्धन पूजा होती है। भारतीय संस्कृति में गौ माता अत्यन्त पूजनीय रही है, श्री कृष्ण ने स्वयं गोचारण करते हुए ग्वाल बालों के साथ मित्रता करके इन्द्र का गर्व चूर कर गोवर्धन पर्वत अंगुली पर उठाकर बृजवासियों की रक्षा की। इसी श्रृंखला का पर्व भाई दूज जिसे यम द्वितीया भी कहते हैं। मृत्यु के देवता स्मरण रखें, परिवार में अकाल मृत्यु न हो, इसी भाव से यह पर्व मनाया जाता है। यमदेव ने इस दिन बहन यमुना का आतिथ्य स्वीकार किया था। आज कल भाई-बहन के पावन स्नेह के रूप में यह पर्व मनाया जाता है। दीपावली पर्व का आरंभ धन-तेरस जो वास्तव में धनवंतरि जयंती है, समुद्र मंथन में इसी दिन धन्वंतरि अवतरित हुए थे। धन्वंतरि को स्वास्थ्य का देवता माना जाता है। इसके मूल में स्वच्छता का भाव है, इसी स्वच्छता के कारण स्वास्थ्य ठीक रहता है। एक पर्व और जो दीपावली के एक दिन पहले नरक चतुर्दशी के रूप में मनाया जाता है। नरक चौदस को द्वापर में श्रीकृष्ण ने नरकासुर को मारकर सौलह हजार स्त्रियों का उद्धार किया था। स्त्री सम्मान की रक्षा कर श्रीकृष्ण ने एक बहुत ही पुनीत कार्य किया था। दीपोत्सव के इस पर्व पर आइये हम सभी आततायी शक्तियों को समाप्त कर अपने राष्ट्र की रक्षा कर परमवैभव के मार्ग को प्रशस्त करें। दीपोत्सव की मंगलमय शुभकामनां।

सत्य की विजय

दीपावली भारत में उत्सव लेकर आती है, धनतेरस से भाईदूज तक पूरा देश उत्सवमय होता है।

डॉ. सोनाली नरगुंदे

रवि हुआ अस्त, ज्योति के पत्र पर लिखा अमर रह गया राम रावण का अपराजेय समर।

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की यह कविता सिर्फ राम की शक्ति की तरह पूजा करती है बल्कि राम को एक ऐसे योद्धा की तरह हमारे सामने रखती है जो विश्व में श्रेष्ठ है। राम नाम को किसी ने ईश्वर कहा किसी ने अवतार परंतु राम यह दो अक्षरों से बना एक जादुई कवच है। राम नाम की शक्ति को देखें तो अनुभूत होता है कि राम जीवन पार कराने वाली अलौलिक लगन है। दशहरे से दीपोत्सव भारतीय परिवारों में एक प्रकार का उत्सव रहता है। यह न सिर्फ भारत वरन् भारतवासी किसी भी धरा पर हों मनाते हैं। दशहरे पर सत्य की जीत का जश्न मनाते हम हिन्दू राम को एक प्राणतत्व की तरह पूजते हैं। ऐसे ही उनके लंका विजय के पश्चात् आगमन को दीपोत्सव अर्थात दीपावली की तरह मनाया जाता है। भारत के प्रत्येक क्षेत्र में दीपावली को भिन्न तरीके से मनाते हैं। हमारे मालवा क्षेत्र में सभी को पता है कि पांच दिवसीय दीपावली मनाई जाती है। परंतु वास्तव में वह सात दिवसीय त्यौहार है। यहां के परिवारों में कार्तिक एकादशी से प्रारंभ होकर यह भाईदूज तक मनाया जाता है। वसुबारस या बज बारस के दिन गौमाता और बछड़े की पूजा करते हैं। इसके बाद धन त्रयोदशी आती है। इस दिन कुबेर की उपासना का पर्व है। रूप चौदस या नरक चतुर्दशी को लेकर सभी का उत्साह भिन्न रहता है। इन दोनों दिनों की एक खास बात है। धन तेरस पुरूषों के महत्व का दिन है तो रूप चौहस महिलाओं के लिए महत्वपूर्ण दिन। इन दोनों दिनों में उबटन लगाकर स्नान करने का महत्व है। अमावस्या तो दीपोत्सव और राम आगमन का दिन है। इस दिन सभी का उत्साह देखने लायक रहता है। यह मानो किसी बड़े इवेंट का सबसे खास दिन हो। भारतीय परंपरा और परिवारों में दीपावली एक ऐसा दिन है जब सभी अपने घरों और परिजनों के साथ दीपावली मनाते हैं। यह साथ का उत्साह का और उल्लास का पर्व है। इसमें एकता, विविधता और सामाजिक बंधनों का परिपालन देखने को मिलता है। दीपावली के अगले दिन हमारे मालवा में धोक पड़वा मनाई जाती है। इसे पाड़वा भी कहते हैं। सभी छोटे बड़ों के आशीर्वाद लेते हैं। इस दिन का महत्व ग्रामीण जीवन के लिए और भी अमूल्य है। इस दिन ग्रामीण अपने पशुधन की पूजा करते हैं। उनका श्रृंगार करते हैं। उनसे सालभर के लिए समृद्धि का आशीष प्राप्त करते हैं। अगला दिन भाई के महत्व का दिवस है भाई दूज। इस दिन सभी बहनें अपने भाइयों को सस्नेह भोजन पर आमंत्रित करती हैं। भाई भी उन्हें उपहार स्वरूप अपना आशीष प्रदान करते हैं।

विश्व में दीपावली - अंधेरे से उजाले का यह पर्व दुनिया के अनेक देशों में मनाया जाता है। मारीशस, मलेशिया, इंडोनेशिया, फीजी, अमेरिका, श्रीलंका, सिंगापुर, थाईलैंड, कनाडा, ब्रिटेन में भी दीपावली का पर्व बहुत उत्साह से मनाया जाता है।

राम नवमी और नवीन धर्म की प्रतिस्थापना

असत्य पर सत्य की विजय के लिए प्रारंभ हुआ एक संकल्प लेकर मानवावतार में प्रभु श्रीराम ने एक नए सिरे से धर्म को प्रतिस्थापित किया। इसमें सत्य को, चरित्र को, परिवार की निष्ठा को सर्वोपरि बताया। इसके लिए उन्होंने ना सिर्फ त्याग किए वरन् ऐसे अनेक नवीन सिद्धांतों को भी मानव जीवन में सभी के समक्ष रखा जिससे मानव जीवन को और भी अधिक उन्नत किया जा सके। भगवान श्री राम ने ना सिर्फ त्याग के प्रतिमान रचे वरन् प्रेम के विविध स्वरूप भी हमारे सामने रखे। उन्होंने बताया कि भाई को कैसे प्रेम किया जा सकता है। भक्त बनकर आए तुलसी, शबरी, अहिल्या, केवट, लक्ष्मण, सीता, हनुमान जैसे अनेक व्यक्तित्वों को भिन्नता होने के बावजूद भी विश्व के समक्ष एक विराट व्यक्तित्व की तरह प्रस्तुत किया। उन्होंने इस बात को सार्थक किया कि राम से बड़ों है कौन? मोसे कौन छोटा?। राम महिमा की बात क्या करें यह उन्हें साक्षात् जीने के बाद पता चलता है। भगवान श्री राम के बारे में अनेक बातें प्रचलित हैं। अनेक कहानियां, किंवदंतियां सुनाई देती हैं। परंतु अनुभव के बाद ही उनके विराट अवतार का ज्ञान या बोध होता है। राम चरित्र है। राम सत्य है । राम शांति है। राम सद्भाव है। राम नाम है मोक्ष का। इस कारण कोई नील तो कोई अंगद बन कर आया। इसी कारण कोई केवट बनकर मिला तो कोई जूठे बैर खिलाने आ गया। कही मंदाकिनी बनकर नदी आई तो कही हनुमान जी ने अपनी छटा बिखेरी। ऐसे ना जाने कितने किरदारों ने अपने मोक्ष के लिए भगवान श्री राम को साकार किया।

विजयपर्व.... विजयादशमी, दशहरा

प्रोफेसर सुब्रतो गुहा

सृष्टि के प्रथम राष्ट्र पुण्यभूमि भारत के प्रमुख सनातन उत्सवों में से एक प्रमुख उत्सव है विजयादशमी। त्रेतायुग से द्वापरयुग, द्वापरयुग से कलयुग तक-हजारों वर्षों से सनातनधर्मी नर-नारी भक्तिभाव से प्रतिवर्ष हर्ष -उल्लास से विजयादशमी उत्सव मनाते रहे हैं-और अनंतकाल तक मनाते रहेंगे। वास्तव में विजयादशमी उत्सव अनेक सुखद संयोगों से जुड़ा है - सतयुग में देवी दुर्गा द्वारा राक्षस महिषासुर के वध का, त्रेतायुग में प्रभु श्रीराम द्वारा राक्षस रावण के वध द्वारा बुराई पर अच्छाई के विजय का, द्वापरयुग में 12 वर्ष वनवास और एक वर्ष अज्ञातवास के उपरान्त पांडवों द्वारा पुनः शस्त्रों के धारण का, कलयुग में 1674 में हिन्दू पद पादशाही की स्थापना के उपरान्त हिन्दू हृदय सम्राट छत्रपति शिवाजी के नेतृत्व में मराठों द्वारा सीमोल्लंघन प्रथा के शुभारंभ का, तथा नवरात्रि के नौ दिवसीय शक्ति आराधना के पश्चात शस्त्र पूजन - का पावन स्मरण दिवस है विजयादशमी। साथ ही विश्व के सनातनधर्मियों की कालजयी सभ्यता -संस्कृति की विजय का प्रतीक दिवस भी है विजयादशमी।

हमारी सनातन गुरुकुल शिक्षा पद्धति में सदैव ही शस्त्र और शास्त्र की समन्वित शिक्षा की परंपरा रही है -क्योंकि हमारे धर्मग्रंथों में कहा गया है कि जब -जब धर्म अर्थात शास्त्र संकट आता है -तब-तब शस्त्र अर्थात हथियारों द्वारा ही धर्मरक्षा संभव होती है। हमारे समस्त देवी -देवता शस्त्रों से सुसज्जित हैं -जिसके द्वारा उन्होंने आसुरी शक्तियों का विनाश किया -देवी दुर्गा द्वारा शुंभ, निशुंभ, महिषासुर जैसे राक्षसों का वध, प्रभु श्रीराम द्वारा राक्षस रावण का वध, भगवान् श्रीकृष्ण द्वारा अत्याचारी कंस का वध -इत्यादि अनेकानेक उदाहरण हमारे धर्मशास्त्रों में हैं। भगवद् गीता में स्वयं भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा -परित्राणाय साधुनाम्, विनाशाय च दुष्कृताम् -अर्थात् सज्जनशक्ति की रक्षा और दुर्जनशक्ति के विनाश हेतु ही भगवान् का मानव अवतार में धरती पर आगमन होता है। इस प्रकार हमारे हिन्दू धर्मशास्त्रों का स्पष्ट सन्देश है कि राष्ट्र व संस्कृति के शत्रुओं के विरुद्ध शस्त्र उठाना और उनका विनाश करना -हिंसा नहीं है, बल्कि कर्म है, धर्म है। अब कलयुग में यदि कोई मनुष्य इसके विपरीत शिक्षा दे -तो हमें अपने ही धर्मशास्त्रों की इस सीख को स्मरण रखना होगा कि यदि देव वाणी और मनुष्य वाणी में विरोधाभास हो -तो हम सनातन धर्मियों को देव वाणी का ही अनुसरण करना है।

हम सभी इस ऐतिहासिक तथ्य से अवगत हैं कि 27 सितंबर, सन् 1925 को विजयादशमी के पावन दिवस नागपुर में आद्य सरसंघचालक परम पूज्य डॉ.केशव बलिराम हेडगेवार ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना की थी -और आज उनके द्वारा राष्ट्रवादी बीजारोपण एक विशाल वटवृक्ष में परिणित हो चुका है -तथा विश्व के सबसे बड़े सांस्कृतिक संगठन के रूप में सुप्रतिष्ठित है। 'संघे शक्ति कलयुगे' -अर्थात कलयुग में संगठन शक्ति ही सर्वोपरि है -इस महामंत्र के साथ ही संघ की आधारशिला रखने का पुनीत उद्देश्य है - हिन्दू समाज के बिखरे तत्वों को एकता व समरसता के सूत्र में पिरोकर पुण्यभूमि भारत को परम वैभव के पथ पर अग्रसर करते हुए पुनः विश्वगुरु के आसन पर विराजित करना। अपने स्थापना दिवस पर प्रतिवर्ष हिन्दुस्तान के प्रत्येक गाँव -कस्बे -शहर में विजयादशमी पथ संचलन में जब संघ के करोड़ों स्वयंसेवक अनुशासित रूप से लयबद्ध कदमताल करते हुए चलते हैं -तो समाज में सज्जनशक्ति का मनोबल बढ़ता है और दुर्जन शक्ति की आत्मा कांपती है।

यद्यपि प्रतिवर्ष हम विजयादशमी के अवसर पर रावण रुपी बुराई का पुतला दहन कर बुराई को मिटाने का संकल्प लेते हैं -तथापि अगले वर्ष और अधिक ऊंचाई वाले रावण के पुतले का दहन करना पड़ता है -अर्थात् समाज से बुराई मिट नहीं पाई है। त्रेतायुग में भगवान् श्रीराम ने राक्षस दशानन रावण का वध किया था -परन्तु आज के कलयुग में भी जिहादी आतंकवादी,आपराधिक तथा राष्ट्रद्रोही तत्वों के स्वरुप में राक्षस जीवित हैं। इसलिए आइये, इस वर्ष विजयादशमी के पावन अवसर पर हम ऐसे आधुनिक राक्षसों के विनाश का संकल्प लें -ताकि हम गर्व से यह उद्घोषित कर सकें-

''मानस भवन में आर्यजन, जिनकी उतारें आरती,
भगवान भारतवर्ष में गूंजे हमारी भारती।''

लम्पी वायरस

खतरनाक लम्पी वायरस के बारे में सबकुछ जानिए, जिससे लगातार गायों की मृत्यु हो रही है।

अमन व्यास

गायों में जो बीमारी फैल रही है, उसे **लम्पी** स्किन डिजीज़ या **लम्पी** वायरस कहा जा रहा है। **लम्पी** का अर्थ होता है पिंड या गाँठ। इस बिमारी में गाय को पहले बुखार आता है, आँखों से पानी आने लगता है और फिर सर, गर्दन, जननांग के आसपास व शरीर में गांठें सख्त गांठे पड़ने लगती है, गांठें बढ़ती जाती हैं, गांठें फूटती हैं तो उनमें से गंदा पीक, रस्सीनुमा पदार्थ और कीड़े निकलते हैं, गाय के मुंह में भी गड़बड़ होने लगती है, जिससे वो भूसा, दलिया इत्यादि नहीं खा पाती, बीमारी की कमजोरी, तीव्र ज्वर और न खा पाने से गाय की कमजोरी उच्च स्थिति पर होती है। थनों में भी सूजन आ जाता है, जिससे गाय के दूध देने की क्षमता बहुत ही कम हो जाती है। कम का मतलब इतना कम कि आज देश में 15 से 20 प्रतिशत दूध का उत्पादन घटा है, इस कारण गोपालकों को बड़ी समस्या आ रही है, क्योकि यह त्यौहार का सीजन है, दूध की सबसे अधिक मांग मिठाई आदि बनाने के लिए इसी समय होती है और स्वाभाविक रूप से इसी कारण दूध के भाव भी कुछ बढ़े हैं।

अर्थव्यवस्था पर प्रभाव - विश्व का सर्वाधिक दूध उत्पादन भारत में होता है , भारत का डेरी उद्योग विश्व का प्रमुख डेरी उद्योग है, यह 13 लाख करोड़ से भी अधिक का उद्योग है, केवल गायें नहीं बल्कि आज भारत के दो करोड़ से अधिक किसान परिवार संकट में हैं, जिनका जीवन गोपालन पर ही निर्भर है। साथ ही आज तक की एक रपट कहती है कि भैंस कम संक्रमित हो रही है क्योंकि उनकी इम्युनिटी गाय से अधिक है लेकिन गायो में सर्वाधिक प्रभावित क्रॉस ब्रिड की गायें हो रही हैं, देसी गाय संक्रमित भी हो रही है तो कुछ सप्ताह में ठीक हो रही है, इसमें बड़ी बात ये है कि क्रॉस ब्रिड की गाय की दुग्ध उत्पादन क्षमता देसी गाय से बहुत अधिक होती है, जहां देशी गाय यदि औसत 3 लिटर दूध देती है तो क्रॉस ब्रिड की गाय औसतन 8 से साढ़े 8 लीटर दूध देती है लेकिन **लम्पी** के कारण इन गायों की क्षमता 3 लिटर तक सीमित हो रही है। अकेले गुजरात में एक लाख लिटर टन का दुग्ध उत्पादन घटा है जो बहुत बड़ी समस्या है।

कैसे आया लम्पी वायरस

1929 में जाम्बिया में मिले पहले केस के बाद इस वायरस ने पूरी दुनिया में अलग-अलग समय पर कहर बरपाते हुए, 2019 में बांगलादेश में तबाही मचाई और उसी साल भारत में पहली बार पश्चिम बंगाल और उड़ीसा में भी केसेस रिपोर्ट हुए, लेकिन इस बरस के अप्रेल में पहला मामला गुजरात की एक गौशाला से आया, आज भारत के बहुत से राज्यों में **लम्पी** फैलता गया और अंडमान निकोबार तक फैल गया है, लेकिन सबसे अधिक तबाही राजस्थान में फैला रखी है, राजस्थान में मृत गायों का ड्रोन शॉट, सडकों पर पड़े हजारों शव, राजस्थान में **लम्पी** से गौवंश की हो रही मृत्यु के आंकड़े सामने ला रहा है, राजस्थान सरकार भी असहाय सी दिख रही है, केंद्र सरकार से इसे राष्ट्रीय आपदा घोषित करने की कह रही है।

कैसे फैलता है लम्पी वायरस

अब प्रश्न ये उठ रहा कि ये फैलता कैसे है, इसकी गति इतनी तेज कैसे है, अभी तक यह तो पक्का नहीं हो पाया कि यह देश में कैसे आया, लेकिन एक से दूसरे पशु तक ये उनके उपर बैठने वाले कीड़ों और मच्छर के कारण फैल रहा है, गुजरात और राजस्थान में इसके अधिक प्रभाव का ये भी एक कारण ये भी है कि इस बरस इन राज्यों में औसत से अधिक बारिश हुई है, जिसके कारण कीड़े-मच्छर पैदा हुए है, इसलिए पशु-विशेषज्ञ लगातार आग्रह कर रहे कि पशुओ के बाड़ों में सफाई रखें, दवाई का छिड़काव करें, और भी सावधानियां रखें जिनसे मच्छर न पनपे।

सरकार क्या कर रही है

प्रधानमन्त्री मोदी ने उत्तरप्रदेश में डैरी उद्योग से सम्बन्धित कार्यक्रम में स्पष्ट किया कि देश में इस बीमारी की वैक्सिन तैयार कर

ली गई है, ट्रायल के बाद वह पशुओं को लगाई जायेगी, लेकिन अभी गॉड फोक्स की वैक्सीन लगाई जा रही है जो काफी हद तक कारगर भी साबित हो रही है, इसीलिए सभी राज्य,केंद्र से वैक्सिन की मांग कर रहे है और केंद्र सरकार भी सतत आपूर्ति कर रही है। इसी के साथ पशुओं की इंटर-स्टेट खरीद फरोख्त भी रोकी जा रही है, जैसे कोविड के समय इंसानों के कन्टेनमेंट जोन बनाये गए थे वैसे ही गायों के लिए भी बनाए जा रहे हैं और भी बहुत से कार्य सभी सरकारें कर रही है।

मेरी जिम्मेदारी क्या है

लेकिन क्या सब सरकार की जिम्मेदारी है क्या, आज ये सबको सोचना पड़ेगा। भैंसों में संक्रमण कम होता है क्योंकि उसकी इम्युनिटी अधिक है तो गाय की इम्युनिटी बढ़ाने की जिम्मेदारी किसकी है। हमने कोरोना काल में कढ़े और च्यवनप्राश का बहुत सेवन किया, अपनी इम्युनिटी बढ़ाने के लिए, पर गाय की कौन बढ़ाएगा। हमें ही बढ़ाना है, सैंकड़ों देशी उपाय गाँवों में हैं, उसे अब क्रियान्वित ही तो करना है। आज गोपालकों की, गौशालाओं की स्थिति बड़गड़ है। एक तरफ दुग्ध उत्पादन कम और दूसरी तरफ बीमारी का प्रकोप, तो उनकी हर सम्भव सहायता हमें ही करनी होगी, और वो गो-माताएं जिन्हें दुधारू न होने के कारण छोड़ दिया गया। जिन्हें हमने उसका ही दूध पीकर उसे आवारा, मवेशी या रली गाय कहा जो हाईवे पर पड़ी मिल जाती है। उसके आश्रय और अन्य व्यवस्था हम सबको करनी चाहिए। क्योंकि अब स्वघोषित एनिमल एक्टिविस्ट कुछ नहीं करेंगे, गो के बेटों को ही अपनी क्षमता,अपनी शक्ति और अपनी बुद्धि से सब करना होगा, वैतरणी यही पार कराएगी।

सेवा करते जाना है....

रतलाम के कमड़े मे लगने वाली संघ शाखा के स्वयंसेवको ने शुल्क एकत्रित कर गौमाता को लपी वायरस से बचाने के लिए 217 गायो को निशुल्क टीके लगाये है।

पूरी शाखा टोली एक-एक घर जाकर गायों को टीका लगाने का कार्य कर रही है।

क्या दूध भी संक्रमित हो गया

अब यह सवाल उठना स्वाभाविक है कि क्या संक्रमित गाय का दूध पीने से संक्रमण या अन्य बीमारी का खतरा इंसान को भी होगा, तो विशेषज्ञों ने स्पष्ट कहा है कि दूध को अच्छे से उबाल कर ही पिएं, इससे किसी प्रकार की बीमारी नहीं होगी, इन्सान में इसके संक्रमण का अभी तक एक भी केस नहीं आया है। संक्रमण की खबर फैलाने वाले बस झूठ फैला रहे है, हां गाय के बछड़े को इससे जरुर समस्या हो सकती है। इसलिए यह स्पष्ट किया गया है कि संक्रमित पशु को शेष पशुओं से अलग रखा जाए उसके खाने इत्यादि की अलग ही व्यवस्था हो।

समाज हो रहा संघ

विश्व के सबसे बड़े संगठन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की 97 वर्ष की यात्रा पर विशेष

संघ चाहता क्या है इस विषय पर भारत में ही नहीं दुनिया भर में जिज्ञासा हैं । संघ के कार्यकर्ताओं के मन में तो उद्देश्य स्पष्ट हैं और वो उद्देश्य है **"सम्पूर्ण समाज का संगठन"** कोई भी अपवाद नहीं है । देश सबका है और सभी इस देश के हैं और संघ संस्थापक का विचार था कि यदि समाज संगठित हो गया तो भारत की सभी समस्या समाप्त हो जायेगी और कोई नयी समस्या भी उत्पन्न नहीं होगी और यह उनका केवल कोरा चिंतन नहीं था इसके पीछे भारत के इतिहास का सुदीर्घ अध्ययन और चिंतन था। संघ संस्थापक डॉ हेडगेवार जी का जन्म तब हुआ था जब भारत में अंग्रेजों द्वारा पाशविक वृत्ति की तरह अत्याचार किये जा रहे थे और स्वतंत्रता आंदोलन की गति भी तीव्र हो रही थी और डॉ हेडगेवार जी को यही विचार आया कि कैसे कुछ 100 -150 वर्षो में कोई न कोई आक्रांता आते हैं, जिनकी भारत के सामने कोई शक्ति नही हैं और वे भारत को अपने अधीन कर लेते हैं, आखिर इसके पीछे का कारण क्या हैं और कारण क्रांतिकारी गतिविधियों में भाग लेने पर, कांग्रेस का कार्य करने पर समाज जीवन में रहते हुए उनके मन में यह बात स्पष्ट हो गई कि यह देश संगठित नही है इसलिये बार बार ऐसा होता है और चाहे देश बहुत शीघ्र अंग्रेजों की दासता से मुक्त हो जायेगा, किंतु क्या संगठन के अभाव में यह स्वतंत्रता स्थिर रहेगी ? क्या फिर भविष्य में कभी कोई लुटेरा नहीं आएगा, क्या फिर भविष्य कोई व्यापार के नाम पर नहीं आयेगा और क्या फिर भारत माता कभी परतंत्र नहीं होगी ? इन प्रश्नों के सागर का डॉ हेडगेवार मंथन कर रहें थे और इस मंथन में से प्रकट हुई **'संघ सुधा'** और फिर संघ की स्थापना, अलौकिक शाखा पद्धति, कार्य विस्तार के लिए प्रचारक परम्परा, वर्गो, प्रशिक्षण शिविरों की योजना और संघ डॉ हेडगेवार जी के समय में ही देश के लगभग सभी जिलों तक पहुंच गया ।

1940 में डॉक्टरजी के स्वर्गवास के पश्चात जब संघ के सरसंघचालक श्रीगुरुजी बने तब उन्होंने डॉ हेडगेवार जी को अपना आदर्श मानकर अनथक, अविरत श्रम करना प्रारंभ किया। इतने प्रवास कि वे एक वर्ष में संपूर्ण भारत की दो बार यात्रा कर लेते हैं, वे 33 वर्ष संघ के सरसंघचालक रहे और उन्होंने 66 बार भारत की परिक्रमा की, जो अपने आप में रिकॉर्ड है। श्रीगुरुजी को संघ का विस्तार करते समय एक बात स्पष्ट हुई कि समाज अनेकानेक वर्गों में बंटा हुआ है, संघ उन्हें संगठित करना चाहता हैं किंतु सब मैदान में शाखा में आयेंगे ये पक्का नहीं है । इसलिए सभी क्षेत्रों में स्वयंसेवकों को जाना पड़ेगा, जो जहाँ है, जैसा है, जो भी कार्य कर रहा है किंतु उस कार्य को करते समय उसके मन में राष्ट्रनिष्ठा प्रथम हो, देश को जरूरत हो तो सब छोड़कर आ जाये और सामान्य नागरिक अनुशासन का पालन करे। इसके लिए उन्होंने स्वयंसेवकों को विभिन्न समाज जीवन के क्षेत्रों में भेजना प्रारंभ किया, दूसरी ओर संघ ने भी सेवा और जागरण के कई कार्य प्रारंभ किये। समाज में भेदभाव की खाई को समाप्त करने के लिए संघ में समरसता मंच बनाया, भारत की परिवार परम्परा टूट रही है। सब अपने व्यक्तिगत स्वार्थो में उलझ रहे हैं और परिवार परम्परा समाप्त हो रहीं थी तो कुटुम्ब प्रबोधन गतिविधि प्रारंभ हुई। धर्म जागरण, ग्राम विकास, गौ संवर्धन और पर्यावरण संवर्धन के काम भी संघ ने प्रारंभ किये एक ओर स्वयंसेवकों द्वारा प्रारंभ किये गए सभी क्षेत्रों में संगठन ओर दूसरी और संघ द्वारा प्रत्यक्ष रूप से किये जा रहे विविध कार्य इनके कारण संघ संपूर्ण देश में सर्वव्यापी और सर्वस्पर्शी हो रहा है। 97 वर्षो में संघ की कभी दो फाड़ देखने को नहीं मिली, गुट नहीं बने, वाद नहीं पनपे, छींटाकशी नहीं हुई, संघ में इन 96 वर्षों में जो दिखा वो है समर्पण, निःस्वार्थ समर्पण। जो स्वार्थ लेकर आये वे या तो कुछ समय बाद बाहर हो गये या फिर परमार्थ की ओर अग्रसर हो गये । और 1925 में संघ स्थापना के समय दुनिया को जो कार्य असम्भव दिख रहा था वह संघ स्थापना के 100 वर्षो में सम्भव दिखने लगा है। अब समाज संगठित हो रहा है, राष्ट्रहित के मुद्दे पर सब एकसाथ आ रहे हैं । किसी खेत में सिंचाई करते किसान से लेकर इसरो में कार्य करते वैज्ञानिक सभी अपनी -अपनी भूमिका समझ भी रहे हैं और निभा भी रहे हैं ।

संघ भी तो यही चाहता हैं कि सुबह होनी चाहिए, उसमें ये कतई महत्वपूर्ण नहीं है कि किसके मुर्गे के बांग देने से सुबह हो । इसलिए अब लगने लगा है संघ कभी समाप्त नही होगा वो तो समाज में विलीन हो जाएगा, जिसकी कोई अलग प्रक्रिया नहीं होगी और फिर **"संघ, समाज हो जायेगा और समाज, संघ हो जायेगा"**

14 लाख दीयों से जगमगाएगी अयोध्या, दीपोत्सव पर इस बार फिर बनेगा वर्ल्ड रिकॉड

अयोध्या में इस बार भी दीपोत्सव को खास बनाने के लिए योगी सरकार ने तैयारी कर ली है। **'दीपोत्सव'** के लिए 14 लाख मिट्टी के दीये तैयार किए जा रहे हैं।

अयोध्या में इस बार दीपोत्सव की खास तैयारी की जा रही है। योगी सरकार के दूसरे कार्यकाल का पहला दीपोत्सव भव्यता के साथ मनाया जाएगा। इस बार राम की पैड़ी से लेकर से लेकर सरयू घाट तक 14 लाख से अधिक दीप जलाकर नया वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया जाएगा। आतिशबाजी से लेकर लेजर शो का भी आयोजन किया जाएगा।

योगी सरकार ने 2017 में की शुरुआत

अयोध्या में यह परंपरा प्रदेश की योगी आदित्यनाथ सरकार ने वर्ष 2017 में डाली थी और इसकी शुरुआत 51 हजार दीयों से हुई थी। वर्ष 2019 में इन दीयों की संख्या बढ़कर चार लाख 10 हजार हो गई थी। वर्ष 2020 में यह संख्या छह लाख थी और 2021 में यह नौ लाख से ज्यादा होकर एक नया विश्व रिकॉर्ड बना गई। इस बार 23 अक्टूबर को आयोजित होने वाले दीपोत्सव में 14 लाख दीये प्रज्वलित करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। ऐसे में अयोध्या के आसपास के गांवों के कुेहारों का काम बहुत बढ़ गया है और वे बहुत बड़े 'ऑर्डर' मिलने की उम्मीद में दिन रात चाक घुमा रहे हैं।

इस बार भी बनेगा वर्ल्ड रिकॉर्ड

इस बार दीपोत्सव के मौके पर 14 लाख 50 हजार दीपक जलाने का लक्ष्य रखा गया है। पिछले पांच वर्षों में दीपोत्सव के दरमियान अवध विश्वविद्यालय ने चार विश्व रिकॉर्ड बनाए हैं। अवध विवि एक बार फिर अपना रिकॉर्ड तोड़कर नया कीर्तिमान बनाएगा। दीपोत्सव को लेकर अभी से ही तैयारियां शुरू कर दी गई हैं। राम की पैड़ी पर साफ-सफाई शुरू हो चुकी है।

"भारत महान प्रश्नोत्तरी"

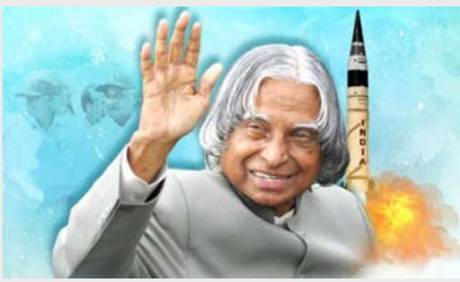

1. डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का जन्म कब हुआ था?
2. डॉ. कलाम ने ऐसी कौन सी पुस्तक लिखी, जो आज भी प्रेरणा देती है?
3. डॉ. कलाम के राष्ट्रपति रहते हुए, कौन सा प्रमुख कार्य हुआ, जिससे भारत भी शक्ति के रूप में उभरा ?

उत्तर इसी अंक में

इस प्रश्नोत्तरी मे भारत के कुछ राज्यो और खाद्य पदार्थो के नाम खोजिये

चलो, खोज निकालें...!

ज	क	शिम	जा	ग	पं	जा	ब
म्मु	चा	व	ल	औ	मा	र	भ
औ	ग	जा	उ	बा	ती	दू	ग
र	मा	दू	त्त	बे	स	न	वा
क	प्र	ध	र	दा	ता	डी	न
श्मी	मी	शि	प्र	र	भा	जी	कृ
र	दा	रा	दे	व	पा	क	ष्ण
ग	न्ना	मं	श	द	क	व	ती

उत्तर - गोवा, उत्तराखंड, केरल, जम्मू और कश्मीर, पंजाब,

विश्व प्रसिद्ध ग्रंथ श्री रामायण के रचियता महर्षि वाल्मीकि

महर्षि वाल्मीकि का जन्म अश्विन मास पूर्णिमा को हुआ था अतः इस दिन को वाल्मीकि जयंती के रूप में मनाया जाता है। ये 'आदि कवि' के नाम से भी प्रसिद्ध हैं जिन्होंने प्रथम श्लोक की खोज की। वाल्मीकि जयंती पूरे भारतवर्ष में मनाई जाती है किन्तु उत्तर भारत में यह विशेष रूप से मनाई जाती है। उत्तर भारत में यह दिवस 'प्रकट दिवस' के रूप में प्रसिध्द है। वाल्मीकि जयंती के दिन विविध आयोजन होते हैं जगह-जगह से शोभा-यात्रा निकाली जाती है। महर्षि वाल्मीकि की प्रतिमा स्थल पर फल वितरण एवं भंडारा का आयोजन होता है। महर्षि वाल्मीकि का जीवन दर्शन यह प्रेरणा देता है कि सच्चाई के रास्ते पर चलकर ही मानव भगवान बन सकता है। यह दिन सत्कर्म को प्रेरित करता है। उनके जीवन के बारे में एक कहानी बहुत प्रसिद्ध है। एक बार तमसा नदी के तट पर घटना घटी जिसके अनुसार वाल्मीकि रामायण- की कृति के बीज पड़े । महर्षि वाल्मीकि नदी के किनारे क्रौंच पक्षी के जोड़े को निहार रहे थे, वह जोड़ा प्रेमालाप में लीन था। तभी एक व्याध (बहेलिया) ने क्रौंच पक्षी के जोड़े में से एक को मार दिया। नर पक्षी की मृत्यु से व्यथित मादा पक्षी विलाप करने लगी। उसके इस विलाप से व्यथित वाल्मीकि के मुख से...

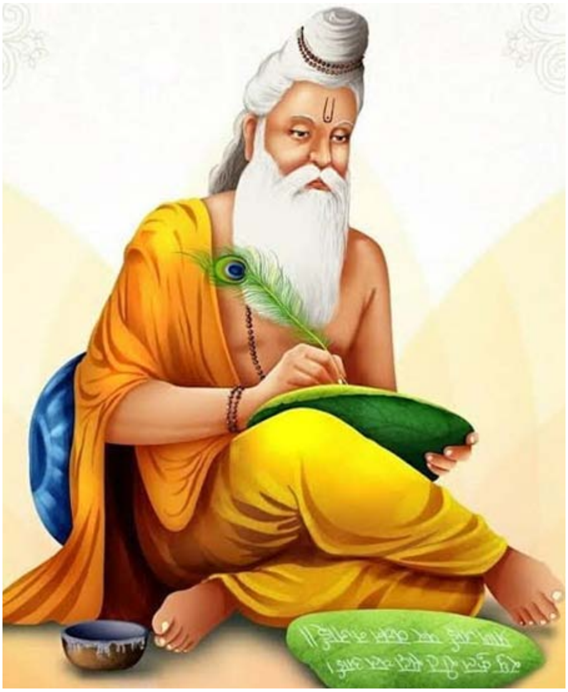

मां निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।
यत्क्रौंचमिथुनादेकम् अवधीः काममोहितम्।।

यह श्लोक फूट पड़ा और यही महाकाव्य रामायण का आधार बना। श्लोक का अर्थ है - हे बहेलिये तूने काममोहित पक्षी का वध किया है इसलिए तुझे कभी भी सम्मान और प्रतिष्ठा नहीं मिलेगी। ज्ञान प्राप्ति के बाद इन्होंने 'रामायण' जैसे विश्व प्रसिद्ध ग्रन्थ की रचना की। वाल्मीकि प्रभुश्रीराम के समकालीन थे, और श्रीराम जी अपने गुरू वशिष्ठ जैसा ही सम्मान उनको देते थे। जब श्रीराम ने लोक व्यवहार और समाज में मर्यादा स्थापित करने हेतु माता सीता का त्याग कर दिया था तब महाऋषि वाल्मीकि ने ही इनको आश्रय दिया था। उनके आश्रम में ही माता सीता ने पुत्र लव-कुश को जन्म दिया। जब श्रीराम ने अश्वमेध यज्ञ किया तो लव कुश ने वाल्मीकि के आश्रम में यज्ञ के घोड़े को बाँध लिया। बाद में उन्होंने लक्ष्मण की सेना को पराजित कर अपना शौर्य दिखाया। महर्षि वाल्मीकि शस्त्र और शास्त्र के प्रकाण्ड विद्वान थे। लव-कुश की सारी शिक्षा-दीक्षा उन्हीं की देखरेख में सम्पूर्ण हुई; शस्त्र, शास्त्र के अलावा गीत, संगीत का भी उन्हें संपूर्ण ज्ञान दिया गया। लव-कुश द्वारा लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न जैसे वीर प्रतापी योध्दाओं को पराजित करना महर्षि द्वारा दी गई युध्द कला में अत्यंत निपुण होने का प्रमाण है। महर्षि वाल्मीकिजी को श्री राम के जीवन की हर घटना का ज्ञान था, और वे भविष्य दृष्टा थे, विश्व की हर घटना की जानकारी लेने में निपुण थे। इसी आधार पर उन्होंने 'रामायण' ग्रंथ की रचना की। इसमें कुल 24000 श्लोक हैं और 7 अध्याय हैं जो कांड के नाम से जाने जाते हैं। इस ग्रंथ से त्रेता युग की सभ्यता, रहन सहन, संस्कृति की पूरी जानकारी मिलती है। संस्कृत भाषा के आदि कवि हैं। हिन्दुओं के आदि काव्य 'रामायण' के रचयिता हैं।

महर्षि कश्यप और अदिति के नवम पुत्र वरुण (आदित्य) से इनका जन्म हुआ। इनकी माता चर्षणी और भाई भृगु थे। वरुण का एक नाम प्रचेत भी है, इसलिए इन्हें प्राचेतस् नाम से उल्लेखित किया जाता है। उपनिषद के विवरण के अनुसार यह भी अपने भाई भृगु की भांति परम ज्ञानी थे। एक बार ध्यान में बैठे हुए वरुण-पुत्र के शरीर को दीमकों ने अपना घर बनाकर ढंक लिया था। साधना पूरी करके जब यह दीमकों के घर, जिसे वाल्मीकि कहते हैं, से बाहर निकले तो लोग इन्हें वाल्मीकि कहने लगे।

लोक देवता संत सिंगाजी

संत सिंगाजी धाम पर शरद पूर्णिमा पर लगता है आस्था का मेला

कौन थे सिंगाजी महाराज - मालवा और निमाड़ के प्रसिद्ध संत सिंगाजी का जन्म 1519 ई. में पिपलिया नामक कस्बे के निकट खजूरी गाँव में एक ग्वाला परिवार में हुआ था। इनके जन्मस्थान (खजूरी ग्राम) का नामकरण उन्हीं के नाम पर किया गया है। सिंगाजी मध्य प्रदेश में खंडवा से 28 मील उत्तर-पूर्व हरसूद तहसील का एक छोटा-सा गांव है। हरसूद का निर्माण हर्षवर्धन द्वारा किया गया था। इसी गांव में सिंगाजी एक सामान्य गोपाल या अहीर परिवार में जन्मे थे। वे बचपन से ही एकांत स्वभाव के थे। जब वन में जानवरों को चराने जाते तो वहां प्रकृति के बीच रमे रहते थे। 16वीं शताब्दी में सिंगाजी की प्रतिभा से प्रेरित होकर गांव के जमींदार ने उन्हें अपना सरदार बना दिया था। सिंगाजी ने 12 वर्ष जमींदार की सेवा की। अपनी आध्यात्मिक करामाती शक्तियों से ज़मींदार के लिए कई लड़ाइयों में विजय भी प्राप्त की। संत सिंगाजी को निमाड़ का कबीर भी कहा जाता है। आज भी निमाड़ में उनके जन्म स्थान व समाधि स्थल पर उनके पदचिह्नों की पूजा-अर्चना की जाती है। उनके चमत्कार आज भी लोग महसूस करते हैं। पशुपालक उन्हें पशु दूध और घी अर्पण करते हैं। इन स्थानों पर घी की अखण्ड ज्योत भी प्रज्वलित रहती है। पिता भीमाजी गवली और माता गवराबाई की तीन सन्तान थीं। बड़े भाई लिंबाजी और बहन का नाम किसनाबाई था। सिंगाजी का जसोदाबाई के साथ विवाह हुआ था। इनके चार पुत्र– कालू, भोलू, सदू और दीप थे। सिंगाजी के जन्म और समाधिस्थ के बारे में विद्वानों के मत अलग-अलग है। कोई उनका जन्म 1574 में बताता है तो कोई 1576 में। इसके अलावा किसी विद्वान ने उनका जन्म 164 और 1616 बताया है।

ऋषि की संतान थे सिंगाजी - मान्यता है कि श्रृंगी ऋषि ने ही सिंगाजी के रूप में जन्म लिया था। संस्कृत में 'श्रृंग' का अर्थ सींग होता है और 'सिंगा' भी 'सिंग' का ही रूप है। भजनों में भी उनकी कई कहानियां चली आ रही हैं। सिंगाजी के जन्म स्थान खजूरी की पहाड़ियों पर आज भी सफेद निशान मौजूद हैं। कहा जाता है कि यहां सिंगाजी अपने पशुओं को चराते थे और दूध दुहते थे। निमाड़-मालवा के पशु-पालक आज भी सिंगाजी को देवता की तरह पूजते हैं। पदचिन्ह के मंदिर स्थापित हैं।

डूब क्षेत्र में है समाधि स्थल - सिंगाजी महाराज का समाधि स्थल इंदिरासागर परियोजना के डूब क्षेत्र में आने की वजह से उस स्थल को 50-60 फीट के परकोटे से सुरक्षित कर मंदिर बनाया जा रहा है। निर्माण कार्य चलने की वजह से भक्तों के दर्शन के लिए संत सिंगाजी महाराज की चरण पादुकाएँ अस्थायी रूप से नजदीक के परिसर में रखी गई हैं।

मेले में यह है खास

- **456 साल से जल रही है अखंड ज्योति**
- **टनों से घी चढ़ाया जाता है समाधि स्थल पर**
- **इंदिरा सागर के बीच में है समाधि स्थल**
- **दो किमी लंबा पैदल पुल पार करते हैं लाखों लोग**
- **पशुओं का भी मेला लगता है**
- **कई टनों से होती है फलों की खपत**
- **500 दुकानें लगती हैं भव्य मेले में**
- **कई बड़े छोटे झूले, खानपान और जादू के शो के स्टाल लगाए जाते हैं।**

खंडवा से पहुंचना है आसान - खंडवा से 35 किमी दूर पीपल्या ग्राम में बनी हुई है, जो बीड़ स्टेशन के पास है। यहां पहुंचने के लिए खंडवा से आधे घंटे की दूरी पर है सिंगाजी। खंडवा से हर थोड़ी देर में बसें उपलब्ध हैं। खंडवा से बीड़ रेलवे स्टेशन, जो कि पीपल्या ग्राम से 3 किमी की दूर स्थित है, तक शटल ट्रेन की सुविधा उपलब्ध है।

अक्टूबर माह के कृषि कार्य

किसान भाईयों के लिए यह माह कृषि कार्यों की दृष्टि से अति महत्वपूर्ण है

गिरधर सिंह सिसौदिया

आलू मटर एवं तोरिया की बुवाई - इस माह में आलू मटर एवं तोरिया की बुवाई की जाती है। आलू का बीज सरकारी संस्थाओं और बीज निगमों से खरीदें। आलू का बीज 3-4 साल बाद अवश्य बदलें अन्यथा विषाणु रोग बढ़ने की संभावना रहती है, आलू की बीज दर 20-25 कुछ प्रति हैक्टेयर बोयें। अच्छे अंकुरित 30-40 ग्राम भार का आलू लगायें। आलू की अच्छी पैदावार के लिये 120-125 कि.ग्रा नत्रजन, 60-80 कि.ग्रा स्फुर तथा 50-60 कि.ग्रा. पोटाश प्रति हैक्टेयर की आवश्यकता पूर्ति करें। फास्फोरस व पोटाश की पूरी मात्रा नाइट्रोजन की आधी मात्रा बुवाई से पहले मेड़ बनाने के पहले जमीन के ऊपर छिड़क दें इसके बाद मेड़ बनायें। नत्रजन की शेष आधी मात्रा बुवाई के 30-35 दिन बाद मिट्टी चढ़ाने से पहले व सिचाई देने के बाद दें। जिन किसानों के पास गोबर की खाद उपलब्ध है, वे 10-15 टन प्रति हैक्टेयर की दर से बुवाई से 1 माह पूर्व डालें।

तोरिया - खरीफ फसलें कटाई के बाद तोरिया फसल उगायें उन्नत किस्म एम-27, टीएस -29, भवानी संगम जवाहर तोरिया बोयें। बीजदर 4 कि.ग्रा प्रति हैक्टेयर तथा पंक्ति से पंक्ति 30 से.मी दूरी रखें।

मटर - इस माह में मटर की फसल उगाकर अधिक लाभ ले। बलुई दोयर से अचुक पीएच मान 6.00 से 7.5 है। मटर के लिये 25 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 60-70 किलो फासफोरस तथा 30-40 किलो पोटाश प्रति हैक्टेयर देवें। सब्जी मटर की प्रमुख किस्म है अर्का मजीत, आजाद मटर, बोनविले, हराबोना तथा जवाहर मटर। 30 सेमी की दूरी पर कतारों में बोयें जिसके लिये 100-120 किलो/ हैक्टेयर बीज की आवश्यकता होती है।

बाजरा, मक्का, ज्वार की देखभाल - बाजरा में हरित बाली रोग लगने पर उखाड़कर जला दें। तीन वर्ष फसल चक्र अपनायें। मक्का की दाने के लिये कटाई तब करें जब भुट्टों के ऊपर की पत्तियाँ सूखने लगें तथा दाना सख्त हो जाये। इस समय दानों में 20-30 प्रतिशत नमी रहती है। कटाई के बाद भुट्टों को एक सप्ताह के लिये धूप में सुखायें तथा बाद में कार्न शेलर से दानों को भुट्टों से अलग कर दे। बेबीकार्न की तुड़ाई रेशा (छिलका) निकलने के 2-3 दिन के अंतराल पर तथा स्वीट कार्न में रेसा (छिलका) निकलने के 20-22 दिन बाद तुड़ाई करें इस समय शुगर मात्रा सर्वाधिक होती है।

ज्वार - मिजकीट मुहें (बाली) निकलने के समय फसल को नुकसान पहुँचाता है कार्ब रिल 50 डब्लूपी कीटनाशक का छिड़काव करें। कंड हानिकारक कवच जलित रोग बीज द्वारा फैलता है। इस कवक के बीजाणु अंकुरण के समय जड़ो द्वारा पौधों में प्रवेश कर जाते है। दानों की जगह कवक के काले बीजाणु मर जाते हैं, फटने पर बाहर आकर फैल जाते हैं। रोकथाम के लिये कवकनाशी दवा या वीटा वेस पॉवर से 2.5 ग्राम प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से उपचारित कर बुवाई करें।

अर्गररोग - पुष्प शाखा पर स्थित स्पाइकल से हल्के गुलाबी रंग का गाड़ा व चिपचिपा शहद जैसा पदार्थ निकलता है जो मनुष्य तथा पशुओं दोनों के लिए हानिकारक है। मुहों को काटकर जला दें, दाना बनने की अवस्था पर थीरम 0.2 प्रतिशत 2-3 दिन छिड़काव करें। ज्वार की फसल को मुहें लगने के समय से लेकर कटाई तक चिड़ियों से भी बहुत नुकसान होता है, रखवाली करे मुहों के दानों के अन्दर की नमी घटकर 20 प्रतिशत रह जावे तक फसल की कटाई करलें।

तिलहन फसलों में सस्य क्रियाऐं - मूंगफली, सोयाबीन एवं तिल प्रमुख खरीफ की तिलहनी फसले है। मूंगफली की खुदाई तब करें जब पुरानी पत्तियाँ पीली पड़ जावें तथा झड़ने लगे फली का छिलका कठोर हो जावें। बीज भी कठोर हो जावे तब मूंगफली की कटाई कर लें, तिल की फलियाँ जब चटकना शुरू होने लगे या फलियों और पत्तों का रंग पीला पड़ जावे तब फसल की कटाई कर लें। जब सोयाबीन की पत्तियों का रंग पीला एवं फलियों का रंग पीला या भूरा ओ जावें तक फसल काट लें। कटाई उपरान्त 4-5 दिन खेत में ही सूखने दें ताकि दानों की नमी 13-14 प्रतिशत हो जाये। इसके बाद ही गहाई करें। **दलहनी फसलों की देखभाल, कपास में शस्य क्रियाऐं, अंगूर , अमरूद, गुलाब के पौधों की कटाई, जड़दार सब्जियां, बेल वाली फसलें आदि कृषि कार्य भी किए जाते है।**

प्लास्टिक - एक अविनाशी दानव

दुर्गेश कुमार साध

मार्कण्डेय पुराण में 'रक्तबीज' नामक एक दानव का जिक्र आता है, जिसने लाखों वर्षों की तपस्या के बाद ब्रह्मा जी से यह वरदान पाया कि उसे मनुष्य, देवता, दानव, यक्ष, गंधर्व, पशु, पक्षी इत्यादि में से कोई भी मार न पाए, जो कि लगभग अमरता का वरदान ही था। हमारे ग्रंथों में ऐसे अनेक वर्णन हैं, जिसमें दानव असीमित शक्ति प्राप्त करने के बाद उसका दुरुपयोग ही करते थे। रक्तबीज नामक दानव की एक और विशेषता थी कि उसके रक्त का कण भी जहाँ गिरता था, वहीं पर एक नया दानव जन्म ले लिया करता था, जिसके कारण सभी देवता, मनुष्य आतंकित होने लगे थे। परंतु कहते हैं ना कि जहाँ समस्या होती है, वहीं समाधान भी हुआ करते हैं। हालाँकि कई बार समाधान इतने सहज नहीं होते, वे आपको हरा-थका डालते हैं। जब रक्तबीज नामक समस्या के समाधान के लिए देवगण कैलाश पर्वत पहुँचे, तो माता पार्वती ने उन्हें सहायता करने का आश्वासन दिया। रक्त से नये-नये राक्षसों के जन्मने के कारण ही माता ने चण्डी-रुप धारण किया था, जिससे उसका वध कर उसके रक्त को पीकर माता ने उसकी एक भी बूँद धरती पर पड़ने नहीं दी। इस प्रकार इस अविनाशी दानव से समाज की मुक्ति का मार्ग प्रशस्त हुआ।

आज के युग में भी हमने एक रासायनिक दानव को समाज में स्थान दिया हुआ है और वह है **'प्लास्टिक'**। हम सभी अपने दैनंदिन के सामानों में किसी-न-किसी रुप में प्लास्टिक का उपयोग करते ही हैं। फिर चाहे वह पैकिंग के रुप में हो अथवा कैरी बैग (थैली) के रुप में या किसी और उत्पाद के रुप में। प्लास्टिक का चलन बीते कुछ वर्षों में अंधाधुंध तरीके से बढ़ा है, कारण है - उसकी सहज उपलब्धता, उसके ढलने की अद्भुत क्षमता और कम कीमत। रोज़मर्रा की शायद ही कोई ऐसी चीज हो, जिसमें प्लास्टिक का प्रयोग न हो रहा हो। ज़रा गौर करें - बच्चों के खिलौनों से लेकर मोबाईल, लैपटॉप, कुर्सी-टेबल, एसी, रिमोट, टीवी, पेन, बॉटल, कप, गिलास, टिफिन, तमाम ऑटोमोबाइल की एसेसरीज़ एवं पार्ट्स, रैनकोट, हैलमेट, विजिटिंग कार्ड, लैप इत्यादि हज़ारों सामानों की लिस्ट बन सकती है, जिससे ये साबित होता है कि प्लास्टिक हमारी जिन्दगी में किस हद तक प्रवेश कर चुका है। रक्तबीज दानव की ही तरह यह नित नये क्षेत्रों में अलग-अलग रुपों में हमारे जीवन में अवांछित रुप से प्रवेश करता ही जा रहा है।

आज के युग में बाज़ारी शक्तियाँ इतनी अधिक हावी हो चुकी हैं कि वे अदृश्य तौर पर ही पूरे विश्व का संचालन करने लगी हैं। प्लास्टिक का प्रयोग जितना सहज है, उतना ही कठिन - उसका विघटन एवं पुनर्नवीनीकरण। कहते हैं कि प्लास्टिक को नष्ट नहीं किया जा सकता, यानी कि उसे पूरी तरह से नष्ट होने के लिए करीब 4000 वर्ष लगते हैं। सोचिए, आपने एक प्लास्टिक की थैली में बाजार से 10 रुपये की सब्जी ख़रीदी (थैली का मूल्य 20-25 पैसे से अधिक नहीं होगा!) और घर लाकर उसे फ्रिज में रखा, सब्ज़ी बनाई और उस थैली को या तो डस्टबिन में डाल दिया या फिर कुछ समय रखकर उसे कूड़े की राह दिखा दी। अब यह कूड़े के रुप में किसी ट्रेंचिंग ग्राउण्ड में जायेगी और कहीं पर ज़मीन में गाड़ दी जायेगी या पानी में बहा दी जायेगी। ज़मीन पर रही तो वर्षों तक ज़मीन में गड़ी रहेगी और पानी में रही तो किसी रुप में उसके जीवों एवं वनस्पतियों को प्रदूषित उनका जीवन लीलती रहेगी। कभी-कभार सड़कों या जंगलों में घूमने वाले जानवर भी अनजाने में खाने की वस्तु के साथ पॉलीथिन को भी निगल लेते हैं, जिसकी वजह से उनकी जान भी चली जाती है। कहा जा सकता है कि प्लास्टिक आज के युग का सबसे सस्ता और अविनाशी ज़हर है।

अचानक धड़कन रुकने में प्राण रक्षा

हार्टअटैक के लक्षण - सीने के बीच, पीठ, गर्दन, हाथों में अचानक उठने वाला दर्द हार्ट अटैक की सूचना वाला दर्द भी हो सकता है अतः उसे मामूली दर्द समझकरनटाल दें।

ये दर्द छाती की जगह, पेट के ऊपरी भाग, गले की तरफ, नीचे जबड़ों की तरफ, हाथों से होता हुआ अंगुली तक भी पहुँच सकता है। मधुमेह के रोगियों में तो बिना दर्द के भी हार्ट-अटैक हो सकता है।

उपरोक्त लक्षण के अलावा यदि दम फूले पसीना आये, हाथ-पैर ठण्डे लगें, कमजोरी आये, जी मिचलाये, उल्टी आये, बेहोशी छाने लगे तब एक मिनिट की देरी भी नहीं करना चाहिए बल्कि तत्काल लिटाकर टाँग ऊंची रखें और कपड़े ढीलेकर, मुँह एक तरफ रखें ताकि उल्टी से साँस न रुके और तुरन्त चिकित्सा उपलब्ध करवायें एवं रोगी को न चलवायें।

ऐसा भी देखा गया है कि उपरोक्त लक्षण रात में जब प्रकट होते हैं तो मरीज या उनके निकटतम व्यक्ति द्वारा **'सुबह दिखा लेंगे, इतनी रात को कौन डॉक्टर मिलेगा'** कहकर टाल दिया जाता है, ऐसा टालना कभी-कभी बहत महंगा पड़ता है। कभी-कभी इसे गैस की परेशानी या स्पोंडोलासिस का दर्द समझकर बाम लगाकर या दवा देकर टाल दिया जाता है।

सांस एवं धड़कन रुकते ही जीवनदान की कोशिश तुरंत करें (सी.पी.आर.)- यदि सांस एवं हृदयगति रुक जाये तो तुरन्त मरीज को समतल कठोर जगह पर लिटा दें और छाती के बीचों बीच जहाँ हृदय स्थित होता है वह स्थान लचकदार रहता है, इस स्थान पर हाथों की दोनों हथेली से इतना दबाव डालें कि छाती डेढ़ से दो इंच दब जाये, फिर दबाव हटा दें, पुनः दबाव डालें। इस कार्य को करते समय हर 6-8 दबाव के बाद मुँह से मुँह लगाकर सांस भी देते रहें। दबाव डालने-हटाने का कार्य 1 मिनिट में लगभग 60 बार हो जाना चाहिये। मुँह से मुँह, साँस फूंकते समय मरीज की नाक, अंगुली से दबाकर बंद रखें ताकि साँस पूरी-पूरी फेफड़े तक जाए, इस बात का ख्याल रखें। दबाव एवं साँस देने की प्रक्रिया मरीज की साँस एवं धड़कन चालू होते ही बंद कर दें एवं मरीज को करवट के बल लिटा दें ताकि यदि उल्टी वगैरह हो तो वह साँस नली में अटके बिना बाहर निकल जाये। यह सभी कार्य हार्टफेल, करेंट, पानी में डूबने से साँस एवं धड़कन रुकते ही तुरन्त बिना एक पल की देरी में किये सम्पन्न होना चाहिए। धड़कन सीने में कान सटाकर पता करें।

"भारत महान प्रश्नोत्तरी के उत्तर"

1. 15 अक्टूबर 1931
2. मेरी जीवन यात्रा, अग्नि की उड़ान
3. पोखरण, परमाणु

जाग्रत मालवा अब सोशल मीडिया पर भी

जाग्रत मालवा से वेबसाइट फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम व यूट्यूब पर जुड़कर देशभर के विशेषकर मालवा के समाचार प्राप्त कर सकते हैं।

अभी फॉलो करें - किसी भी प्लेटफॉर्म पर जाकर जाग्रत मालवा सर्च करें

www.jagratmalwa.com

फूलो से बनाया शीतल पेय, आज एक बड़ा उद्योग बन रहा

पढ़िए सेज का प्रारंभ करने वाली अर्चना जी से जाग्रत मालवा की खास बातचीत

मन में विचार कैसे आया?

इस फूल की खेती हम पहले से ही करते थे तो पता था की यह स्वास्थ के लिये कितना लाभदायक है फिर कोरोना का समय आया तो पता चला की इेयूनिटी और स्वास्थ कितना जरूरी है। मैं गांव की रहने वाली हूँ तो मैंने यह पाया की आजकल गांव में अचानक से शुगर की बिमारी ज्यादा बढ़ गई है तो पता चला की गर्मियों में जो लोग घर के बाहर काम करते है वो ग्लूकोस या फिर रसना बहुत पीते है गर्मी से बचने के लिए जबकि दोनों में ही शुगर लेवल बहुत हाई है तब मेरे मन में यह विचार आया की क्योंना में एक ऐसा ड्रिंक बनाऊ जो पूरी तरह से प्राकृतिक हो और जो स्वास्थ के लिए हर तरफ से लाभदायक हो।

प्रारंभ कैसे हुआ

इस फूल की खेती हम करते हैं और इसके गुण से अवगत थे क्योंकि हम घर ने इसका प्रयोग करते थे चूँकि मेरे जीवनसाथी **food & beverage industry** से है तो मैंने अपने मन का विचार उनके साथ साझा किया फिर हमने 3 साल तक इस पर काम किया सारी रिसर्च करी कई सारे प्रोडक्ट बनाये बहुत प्रयोग किये फिर जा कर हमने यह प्रोडक्ट बनाया

विक्रय कैसे करते है?

विक्रय के लिए ऑनलाईन प्लेटफॉर्म, अमेजन, फ्लिपकार्ड व अन्य सोश्यल मिडिया साईड् की सहायता ली जा रही है। साथ ही विभिन्न दुकानों इत्यादि के माध्यम से भी विक्रय किया जा रहा है।

विशेषताएँ

अभी स्थिति क्या है?

अभी हमे प्रारंभ किये हुए लगभग 4 महीने ही हुए है पर हमारी प्रगति हो रही है

भविष्य का लक्ष्य क्या है?

हम हर घर तक पहुँचना चाहते है क्योंकि यह पूरी तरह से प्राकृतिक ड्रिंक है जो विटामिन/मिनरल और ऐनर्जी से भरपूर है तो हम चाहते है की इसका लाभ सभी को मिले इसलिए हमने इसकी किमत भी मात्र 10 रू. ही रखी है ताकि इसे सभी वर्ग के लोगों तक पहुँच मिले।

इन्दौर के एल एन सी टी कॉलेज में रोजगार सृजन केन्द्र का शुभारंभ

इंदौर के एल एन सी टी कॉलेज में 'रोजगार सृजन केंद्र' का शुभारंभ हुआ, कार्यक्रम में उपस्थित स्वदेशी जागरण मंच के सह संगठन मंत्री श्री सतीश कुमार जी ने कहा कि इस केंद्र के माध्यम से महाविद्यालय में अध्ययनरत विधार्थियों को रोजगार संबन्धी मार्गदर्शन प्राप्त होगा।

श्री सतीश जी ने बड़े जोर देकर कहा कि महाविद्यालय के बच्चों को **'रोजगार से स्वरोजगार'** की और अग्रसर होना होगा, हमारे युवाओं को नौकरी करने वाले से नौकरी देने वाले की यात्रा करनी होगी और निसंदेह आज भारत में **'स्टार्ट-अप'** द्रुत गति से बड़ रहे है।

धोखा दे सकता है एप्प का चस्का

लोग स्मार्ट फोन पर एप्प डाउनलोड करते समय एप्प से मांगी गई हर एक इजाजत देते चले जाते है। यह आदत कभी उलटी भी पड़ सकती है।

आज हर हाथ में मोबाइल है और हर काम के लिए एप। संदेश भेजने के लिए एप्प, तो फोटो खींचने के लिए एप्प। चैट के लिए एप्प तो वीडियो कॉल के लिए एप्प। पैसे के लेनदेन के लिए एप्प तो वीडियो के लिए एप्प। रेडियो के लिए एप्प तो फोटो को खूबसूरत बनाने के लिए एप्प। आपके मोबाइल में तमाम किस्म के एप्प हैं लेकिन फिर भी मन है कि भरता ही नहीं।

कभी विज्ञापन देखकर, या फिर दूसरों की देखा-देखी लोग धड़ाधड़ एप्प डाउनलोड करने में लगे हैं। बिना यह पड़ताल किए कि इस एप्प की पृष्ठभूमि और **'प्रतिष्ठा'** कैसी है और दूसरे लोगों ने उस पर कैसी प्रतिक्रिया की है। बिना गौर किए कि इन्स्टॉल किए जाते समय वह एप्प आपसे कैसी-कैसी इजाजत मांग रहा है और वह आपके स्मार्टफोन में क्या कुछ एक्सेस करने वाला है। एप्प की तरफ से इजाजत मांगने के सवाल आते चले जाते हैं और आप फटाक से जवाब देते चले जाते हैं- क्या हम आपके संपर्कों की सूची देख सकते हैं? हां। क्या आपके कैमरे का इस्तेमाल कर सकते हैं? हां। क्या आपकी फाइलों को एक्सेस कर सकते हैं? हां। क्या आपके फोन कनेक्शन का इस्तेमाल करते हुए संदेश और कॉल कर सकते हैं? हां। इंटरनेट कनेक्टिविटी का प्रयोग कर सकते हैं? हां। आपकी लोकेशन को जान सकते हैं? हां।

बहुत से लोगों को ऐसा लगता है कि हरेक इजाजत न दी गई तो एप्प ढंग से काम नहीं कर पाएगा या फिर इंस्टॉल नहीं हो सकेगा। तो हां कहने की इस हड़बड़ी का क्या कहा जाए। ऐसा भी क्या है कि आप हरेक एप्प को अपना सब कुछ थमा देने पर आमादा हैं? वही सब जो आप किसी दूसरे इंसान को देने की बात सपने में भी नहीं सोच सकते, एप्स को सौंपते समय पलक भी नहीं झपकाते। लेकिन आपकी यह लापरवाही और उदारता किसी भी दिन उलटी पड़ सकती है। इनमें से कई एप्स किसी शातिर इंसान की ही तरह आपकी गतिविधियों और सूचनाओं पर निगाह रखने तथा उन्हें अपराधी तत्वों तक भेजने में सक्षम हैं। इन सूचनाओं में आपकी पहचान से जुड़ी जानकारियां भी हैं, जैसे नाम, ईमेल, फोन नंबर, पता, पासवर्ड, आधार कार्ड नंबर, क्रेडिट कार्ड नंबर, फोटो और यहां तक कि पहचान पत्र जैसे दस्तावेज भी। जब इस तरह की सूचनाएं अपराधियों तक पहुंच जाती हैं तो कई बार वैसी घटनाएं होती हैं जो अखबारों में अक्सर छपती हैं।

खतरनाक माने जाने वाले एप्स की संख्या कितनी होगी? पिछले साल गूगल ने अपने प्ले स्टोर पर निजता का उल्लंघन करने के लिए 12 लाख एप्लीकेशनों को ब्लॉक किया है। लेकिन सिर्फ उससे बात नहीं बनेगी। मोबाइल यूजर का खुद सतर्क होना और सावधानी बरतना ज्यादा जरूरी है।

क्या कुछ कर सकते हैं खतरनाक एप्प

❖ पहचान से जुड़ी जानकारी चुराना।
❖ लोकेशन की जानकारी चुराकर बेचना
❖ आपके नंबर से खरीदारी कर लेना (इन-एप्प परचेज)
❖ विज्ञापनों की बौछार कर देना
❖ आपके संपर्क नंबर चुरा लेना
❖ खुद को आपके फोन का एडमिन बना लेना
❖ इन तमाम चुनौतियों के बावजूद मोबाइल एप्स का सुरक्षित इस्तेमाल करना संभव है। जरूरत है सही जानकारी, सावधानी और सतर्कता की।

कैसे रहें सुरक्षित -

❖ जैसे ही फोन के ऑपरेटिंग सिस्टम का अपडेट आए, उसे तुरंत इन्स्टॉल करें। नए फीचर्स के साथ-साथ ये ताजातरीन सुरक्षा चुनौतियों के समाधान भी मुहैया कराते हैं।
❖ एंड्रोइड प्ले स्टोर और आइफोन एप स्टोर के अलावा किसी और ठिकाने से एप डाउनलोड न करें। इन दोनों के अलावा कुछ और भी वैकल्पिक ठिकाने हैं जहाँ से एप डाउनलोड किए जा सकते हैं।
❖ एप्स को डाउनलोड करने वालों की संख्या, डेवलपर का नाम और यूजर्स के फीडबैक को देखकर ही डाउनलोड करें
❖ इंटरनेट पर सर्च करके देखें कि क्या वह एप सुरक्षित है
❖ इन्स्टॉलेशन के दौरान एप्प को सिर्फ उतना ही करने की इजाजत दें जो सुरक्षित है और उस एप्प के इस्तेमाल के लिए जरूरी है
❖ जेलब्रेकिंग या रूटिंग जैसी हैकिंग तकनीकों का इस्तेमाल न करें
❖ एंटीवायरस इन्स्टॉल करें
❖ अपनी जरूरी फाइलों और सामग्री का बैकअप लेते रहे

- पांचजन्य से साभार

मुस्लिम क्लासमेट से शादी करके खतरे में डॉक्टर शहर बदलने पर भी हो रहे जानलेवा हमले

उज्जैन निवासी डॉक्टर भारत शर्मा ने दो साल पहले अपनी मुस्लिम सहपाठी डॉक्टर से वैदिक रीति से विवाह किया था। लेकिन यह लव मैरिज उनके परिवार के लिए खतरा बन गया कुछ लोग उन्हें जान से मारने की धमकी देने लगे। जिसके कारण दोनों को कई बार अपने ठिकाने बदलने पड़े। कुछ ही महीनों पहले डॉक्टर दंपति सुरक्षित ठिकाने की तलाश में रतलाम आया। रतलाम में आए उन्हें कुछ ही दिन हुए थे कि उन पर दो बार जानलेवा हमला करने की कोशिश की गई। दोनों इन हमलों में बाल-बाल बच गए। यहां तक कि डॉक्टर की पत्नी को अपहरण करने की भी कोशिश की गई।

डॉक्टर दंपति ने सुरक्षा के लिए कई बार पुलिस अधिकारियों से गुहार लगाई। पुलिस अधिकारियों ने उन्हें आश्वासन तो दिया, लेकिन सुरक्षा के ठोस उपाय नहीं किए गए। पुलिस व्यवस्था से निराश होने के बाद डॉ. शर्मा ने हाईकोर्ट में गुहार लगाई। इन्दौर में हाईकोर्ट ने पुलिस को दोनों को सुरक्षा देने का निर्देश दिया। रतलाम के पुलिस अधीक्षक ने अब तक डॉ. शर्मा और उनके परिवार को सुरक्षा मुहैया नहीं करवाई है। डॉ. शर्मा ने बताया कि जब उन्होंने इस संबंध में रतलाम एसपी अभिषेक तिवारी से संपर्क किया तो उन्होंने कहा कि वे पैसा खर्च करके एक सुरक्षा एजेंसी से गार्ड की सेवाएं ले लें। वहीं, दूसरी ओर डॉ. शर्मा का कहना है कि लगातार जगह बदलने के कारण उनकी आर्थिक स्थिति ऐसी नहीं है कि वे सुरक्षाकर्मी का वेतन दे सकें। डॉ. शर्मा ने लगातार मिल रही धमकियों के चलते संगठनों से भी कई बार मदद मांगी। उन्हें मदद मिली भी, लेकिन ये मदद भी सुरक्षा के लिहाज से नाकाफी थी। डॉ. शर्मा को डर है कि उन्हें और उनके परिवार को कभी भी मार दिया जा सकता है। उन्होंने इस संबंध में प्रदेश के गृहमंत्री और मुख्यमंत्री समेत कई बीजेपी नेताओं को भी पत्र लिखे हैं और गुहार लगाई है कि उन्हें निशुल्क सुरक्षा उपलब्ध कराई जाए।

भारत को 2047 तक इस्लामिक देश बनाने का षड्यंत्र रचने वाला पीएफआई संगठन प्रतिबंधित

भारत सरकार ने इस्लामी कट्टरपंथी संगठन पीएफ आई (पॉपुलर फ्रंट ऑफ इंडिया) को 5 वर्षों के लिए प्रतिबंधित कर दिया है। केंद्रीय गृह मंत्रालय ने बताया है कि कैसे केंद्रीय जेंश एजेंसियों द्वारा संगठन के ठिकानों पर की गई छपेमारी में कई भडकाऊ मटेरियल मिले। इसमें प्रमुख है एक ब्राउचर और एक सीडी, जिसका नाम है **'मिशन 2047',** अर्थात अजादी के 100 वर्ष पूरे होने तक भारत को एक इस्लामी मुल्क में तब्दील कर देना।

ये दस्तावेज महाराष्ट्र में पीएफआई के 'राज्य उपाध्यक्ष' के यहाँ छापेमारी के दौरान जब्त किए गए। साथ ही राज्य में पीएफआई के 'प्रदेश अध्यक्ष' के यहाँ से भी ट्रेनिंग के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले कई दस्तावेज मिले। कर्नाटक और तमिलनाडु में संगठन के ठिकानों पर छापेमारी के दौरान अवैध रूप से इकट्ठा किए गए कैश भी मिले। पीएफ आई द्वारा आई ई डी विस्फोटक तैयार करने के लिए भी मुस्लिम कट्टरपंथियों को प्रशिक्षित किया जा रहा था।

साथ ही कई ऐसे पेन ड्राइव मिले, जिसमें खूँखार वैश्विक आतंकी संगठन आईएसआईएस के कई वीडियो थे। उत्तर प्रदेश में संगठन के ठिकानों पर 'गजवा-ए-हिन्द' से जुड़े कई वीडियो मिले। तमिलनाडु में पीएफआई के लोकेशंस पर छापेमारी के दौरान मरीन रेडियो सेट्स भी जब्त किए गए, जिससे पता चलता है कि समुद्र में भी ये सक्रिय थे। तमिलनाडु और केरल में संगठन की खासी उपस्थिति है, जहाँ पीएफआई सरगनाओं की गिरफ्तारियों के बाद जम कर हिंसा हुई। इस हिंसा में भाजपा-आरएसएस कार्यकर्ताओं और सरकारी संपत्ति को जम कर नुकसान पहुँचाया गया।

काशी विश्वनाथ कॉरिडोर से चार गुना बड़े और भव्य महाकाल लोक के प्रथम चरण को पीएम मोदी 11 अक्टूबर को करेंगे लोकार्पित

उज्जैन में महाकाल लोक का पहले चरण का काम पूरा हो गया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 11 अक्टूबर को महाकाल लोक का लोकार्पण करेंगे। इसे लेकर पूरी तैयारी हो गई है। मालवा इलाके के लिए एक बड़ी सौगात है। काशी विश्वनाथ की तरह ही महाकाल की नगरी को भी सजाया गया है। कॉरिडोर बनने के बाद मंदिर के आसपास का पूरा दृश्य ही बदल गया है। साथ ही रात में लाइटिंग के बाद यहां का नजारा काफी भव्य दिखता है। महाकाल लोक को भव्य तरीके से सजाया गया है। बीच-बीच में भगवान की भव्य मूर्तियां लगाई गई हैं। इसके साथ ही भगवान शिव के अनेक अवतार को यहां प्रदर्शित किया गया है। बताया जाता है कि काशी से चार गुना बड़ा महाकाल लोक है। इस पूरे प्रोजेक्ट पर करीब 750 करोड़ रुपये खर्च होंगे। पूरा मंदिर परिसर दो हेक्टेयर में है। महाकाल लोक के अंदर फेसिलिटी सेंटर भी होगा। इसके निर्माण हेतु 422 करोड़ प्रदेश की सरकार दे रही है। 21 करोड़ मंदिर समिति और बाकी पैसा केंद्र सरकार ने दिया है।

महाकाल लोक की लंबाई 920 मीटर है। इसका निर्माण कार्य 2019 में शुरू हुआ था। कॉरिडोर में प्रवेश करते ही श्रद्धालुओं को अद्भुत रूप देखने को मिलेगा।

इस चलीत कार से खेल-खेल में सिखेंगे बच्चे

इंदौर वंचित वर्गो के बच्चों को जीवन उपयोगी शिक्षा देने और खेल खेल में शिक्षा के प्रति लगाव उत्पन्न करने के उद्देश्य से इंदौर शहर को बालमित्र बनाने की दिशा में अभिनव पहल की गई है। इसके तहत इंदौर पुलिस के तत्वावधान में, चाइल्ड लाइन व अशासकीय संस्था आस द्वारा **'मस्ती की पाठशाला'** नामक चलित पुस्तकालय का लोकार्पण किया गया। पुलिस आयुक्त इंदौर महागर हरिनारायणचारी मिश्र एवं अति. पुलिस आयुक्त (अपराध/मुयालय) इंदौर राजेश हिंगणकर के निर्देशन में पुलिस कंट्रोल रुम पलासिया में आयोजित इस कार्यक्रम में अति. पुलिस उपायुक्त मुख्यालय मनीषा पाठक सोनी ने हरी झंडी दिखाकर चलित पुस्तकालय मोबाइल वैन की शुरूआत की। यह मोबाइल वैन (होप) **'आस ऑन व्हील्स'** एक चलती हुई मस्ती की पाठशाला के रूप में जानी जाएगी। यह वैन एसीजी (एडवांस कैप्स्यूल ग्रुप) केयर फाउंडेशन द्वारा संस्था आस को प्रदान की गई है। यह वैन, बच्चों के लिए मनोरंजक व ज्ञानवर्धक गतिविधियों की शिक्षण सामग्री, खिलौने, पेंटिंग्स आदि से सुसज्जित है, जो चाइल्ड लाइन के साथ संस्था आस द्वारा शहर की स्लम बस्तियों, समाज के वंचित तबके के बीच ले जाकर, उनके बच्चों को मनोरंजक गतिविधियों के माध्यम से शिक्षित करने का काम करेगी। उन्हें समाज की मुख्य धारा में जोड़ने के लिए एक चलित स्कूल के रूप में मस्ती की पाठशाला कार्य करने का प्रयास करेगी। इस मस्ती की पाठशाला के लिए मोबाइल वैन प्रदान करने वाली एसीजी कंपनी के सुनील और विनीत ने अपनी कंपनी और एसीजी केयर फाउंडेशन के कार्यो के बारे में जानकारी दी। संस्था आस के वसीम इकबाल ने बताया गया कि यह मोबाइल वैन पूरे इंदौर शहर में कार्य करेगी। मनोरंजक गतिविधियों के माध्यम से वंचित वर्गों के बच्चों के साथ तालमेल बनाने, असुरक्षित स्थानों से बच्चों को बचाने, उन्हें आश्रय ग्रहों तक पहुंचाने तथा मोबाइल स्कूल के माध्यम से इन छात्रों को शिक्षा प्रदान करने के लिए कार्य करेगी। अति. पुलिस उपायुक्त मनीषा पाठक सोनी ने बच्चों को बाल सुरक्षा के बारे में जानकारी दी और उन्हें पुलिस की कार्यप्रणाली के बारे में बताया। बच्चों को पुलिस कंट्रोल रूम में घुमाया गया व उन्हें बताया कि पुलिस किस तरह से कार्य करती है। बच्चों के द्वारा भी इस दौरान तरह तरह के प्रश्न पूछे गए जिस पर पुलिस अधिकारियों द्वारा बड़े ही रोचक अंदाज में प्रश्नों का जवाब देकर बच्चों की जिज्ञासाओं को शांत किया गया।

महाकाल लोक में भगवान महाकाल से संबंधित मनभावन प्रतिमाएं

नवम्बर माह के मुख्य व्रत, त्यौहार एवं दिवस

ता. ०४ देवउठनी ग्यारस
ता. १४ पंडित नेहरू जयंती, बाल दिवस
ता. १७ लाला लाजपत राय बलिदान दिवस
ता. १९ रानी लक्ष्मी बाई जयंती
ता. २२ वीर दुर्गादास राठौर पुण्यतिथि
ता. २८ विवाह पंचमी, नाग दिवाली

बुक-पोस्ट

जाग्रत मालवा

प्रति,

स्वामी- विश्व संवाद केन्द्र के लिए प्रकाशक और मुद्रक दिनेश गुप्ता द्वारा मुद्रांकण ऑफसेट ए-11/डी, पोलोग्राउन्ड इन्दौर म.प्र. से मुद्रित एवं 72, नारायण बाग, जी-1, केसरदीप एवेन्यू इन्दौर (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक अरूण सपकाले फोन नं. 0731-3551341